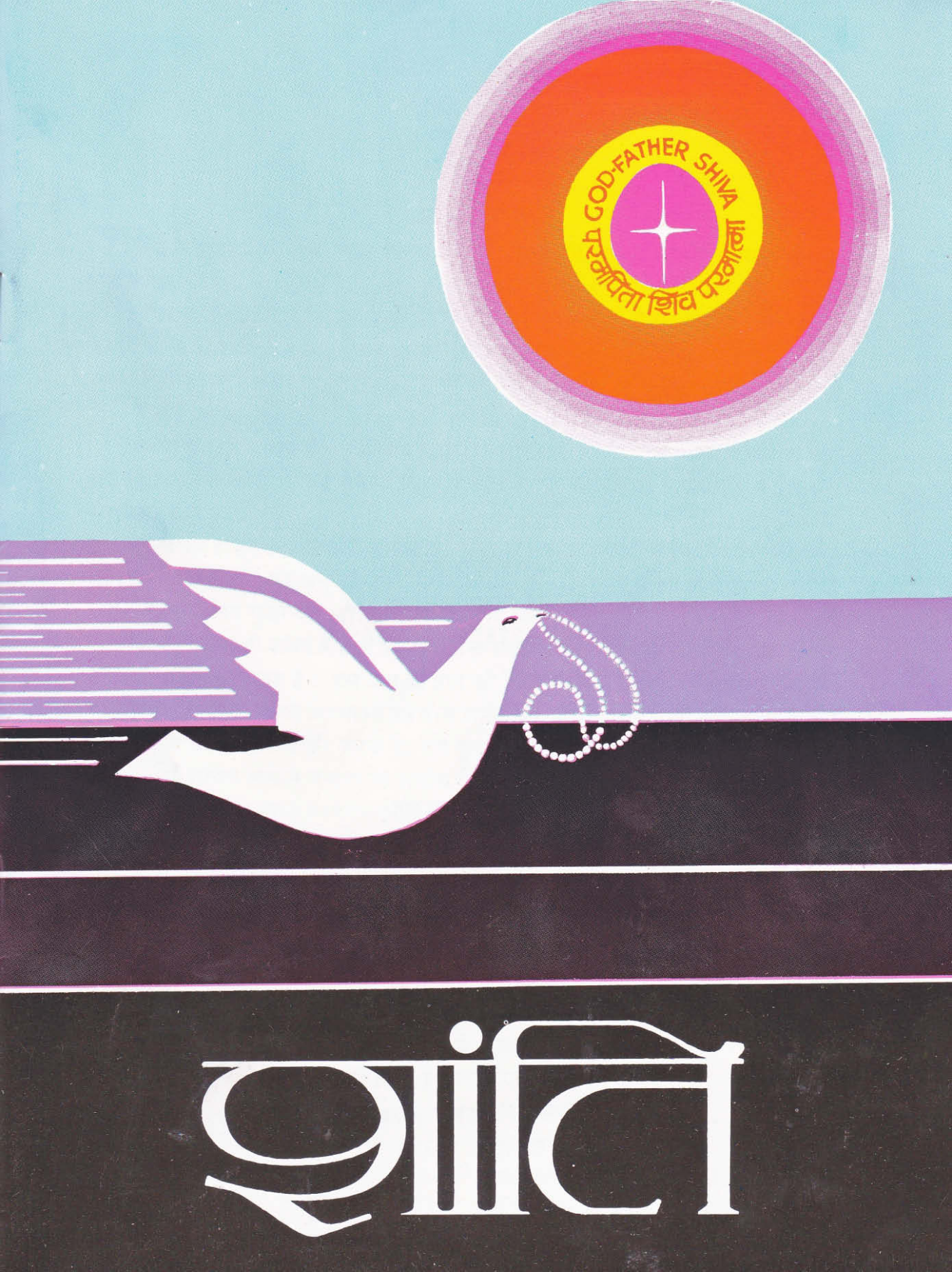
GOD-FATHER SHIVA
परमपिता शिव परमात्मा
शांति

मुद्रक:
ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस,
शान्तिवन, आबू रोड – 307 510
☎ – 228125, 228126

पुस्तक मिलने का पता:
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501

कापी राइट:
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501
राजस्थान, भारत ।

ओम् शान्ति

शान्ति के सागर परमात्मा की शान्त स्वरूप आत्माओं बच्चों प्रति शान्ति की शक्ति से सम्पन्न सुमधुर याद स्वीकार हो ।

शान्ति का शब्दार्थ तो आज सब जानते हैं । जब कोई शरीर छोड़ता है तो सब कहते हैं - हे परमात्मा, उनकी आत्मा को शान्ति देना अर्थात् जाने अन्जाने शान्ति का सच्चा दाता शान्ति-सागर परमात्मा हैं, यह सब जानते हैं परन्तु क्या उसकी अनुभूति है ? शान्ति का ज्ञान सबको है, परन्तु शान्ति सर्वश्रेष्ठ गुण और शक्ति है - यह कोई नहीं जानता ।

शान्ति सबका स्वधर्म है – यह सत्य सब जान और मान लें तो आज विश्व में धर्म के नाम पर जो अशान्ति फैली है, वह समाप्त हो जाये और शान्ति की शीतल अमृतधारा से इस धरा पर स्वर्ग उतर आये ।

शान्ति धाम ही हम सब आत्माओं का स्वदेश है और वहीं से हम अपना अभिनय करने इस सृष्टि-रंगमंच पर आये हैं । **इस ज्ञान की अनुभूति होने से सच्चास्वदेश-प्रेम समझ में आ जाये ताकि सीमित राष्ट्र-भावना जनित युद्धों की अशान्ति सदा के लिए विदा हो जाये ।**

बिजली विज्ञान की शक्ति है, **उसी प्रकार शान्ति सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक शक्ति है और उसके दाता परमपिता परमात्मा हैं । इस बात के ज्ञान की अनुभूति तथा प्रयोगों से आज के अशान्त मानसिक तनावग्रस्त मानव आत्माओं को परम शान्ति का अनुभव कराया जा सकता है । शान्ति नाना प्रकार की शक्तियों की जननी है, उसे पुनर्जीवित कर पुनः विश्व में मानव को सम्पूर्ण स्वस्थ और शक्ति सम्पन्न बनाया जा सकता है ।**

अणु की शक्ति के कारण आज मानव सृष्टि-विनाश के भय से कॉप उठा है । **शान्ति-सागर परमात्मा से प्राप्त इस शान्ति की शक्ति द्वारा आज सुख, शान्ति, पवित्रता तथा समृद्धि सम्पन्न स्वर्गीय सृष्टि के निर्माण का कार्य हो रहा है यही दिव्य संदेश देने यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय शान्ति सम्मेलन, शान्ति-अनुभूति शिविर आदि असंख्य प्रवृत्तियॉ एवं प्रयोग विश्व-स्तर पर कर रहा है । आशा है कि इस पुस्तिका में व्यक्त हुई शान्ति की सरल भावना आप सर्व आत्माओं को स्पर्श करे ताकि आप में शान्तिदाता परमात्मा से शान्ति प्राप्त करने की प्रेरणा जगे एवं आप सच्चे शान्तिदूत बन हमारी इस सुख-शान्ति की दुनिया बनाने में सहयोगी बनें । यही शुभ भावना और कामना है ।**

पाण्डव भवन
माउण्ट आबू (राजस्थान)
९-२-१९८५

ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि
मुख्य प्रशासिका
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

अशान्ति के कारण

एक समय इस सृष्टि पर सुख-शान्ति का पूरा साम्राज्य था। आज घर घर में मानसिक तनाव जनित अशान्ति का वातावरण है। परिणामस्वरूप आज का मानव **दिल के दौरे का शिकार है – साथ ही अन्य भी अनेक नये नये रोगों से आक्रान्त भी। डॉक्टरों का कहना है कि ९२% रोग मानसिक तनाव और अशान्ति के कारण होते हैं। यही कारण है कि आज अनिद्रा, शक्तिहीनता, दुर्घटनाग्रस्तता और गरीबी बढ़ रही है। साथ ही औद्योगिक अशान्ति के फलस्वरूप तालाबन्दी, हड़ताल, बेरोजगारी, वस्तुओं का अभाव, संग्रहखोरी की सीमायें पार हो रही हैं।**

आज भाई, भाई के साथ **धन के लिए झगड़ते हैं। पारिवारिक स्नेहपूर्ण शान्ति के स्थान पर अशान्ति, कलह-क्लेश का वातावरण बढ़ रहा है, जिससे दिल के तथा घर के टुकड़े हो रहे हैं।**

धार्मिक अन्धविश्वास एवं कट्टरता को लेकर धर्मयुद्धों का बाजार भी आज गर्म है। इतिहास साक्षी है-जितने युद्ध आज तक हुए हैं उनमें ७८% धर्म के नाम पर हुए हैं। इस प्रकार **धर्मसत्ता और राज्यसत्ता की लालसा ने काफी अशान्ति बढ़ाई है। आज राज सिंहासन भी कांटों का सिंहासन बन गया है।**

धन-धान्य से भरी-पुरी इस धरती पर अब अकाल, मंहगाई तथा अनाचार की वृद्धि हो रही है। अनेक समस्याओं से घिरा हताश-निराश मानव आत्महत्या की ओर प्रेरित होता है। अपराधों की वृद्धि के साथ कैदियों-अभियुक्तों की संख्या भी बढ़ रही है।

विज्ञान की सुख-सुविधायें भी एक तरफ वरदानी, तो दूसरी तरफ अभिशाप की निमित्त बन रही हैं। **आज जब अणुयुद्ध की विकरालता, विनाश के ताण्डव नृत्य की तैयारियाँ हो रही हैं, तब कौन शान्ति की सेज पर चैन की नींद ले सकता है?**

इस प्रकार हम अशान्ति के कारणों को एवं लक्षणों को तो जानते हैं,पर इनके निवारण का सही मार्ग नहीं जानते। अब हम तटस्थ बुद्धि से सोचें कि

सुख-शान्ति का दाता कौन है? अशान्ति की दुविधा में शान्ति की मन-भावनी हवा कौन ला सकता है?

अशान्ति के कारण

सम्पत्ति और सर्व साधन होते हुए भी आज के मानव
सच्ची शान्ति के प्यासे हैं।

शान्ति का स्रोत कौन ?

विनाशी व्यक्ति वा वस्तु से अल्पकाल की शान्ति मिल सकती है, परन्तु अविनाशी शान्ति का मूल स्रोत शान्ति-सागर परमात्मा ही हैं ।

शान्ति का स्रोत कौन ?

सुख-शान्ति का दाता कौन ? यह बहुत जटिल प्रश्न है । यही कारण है कि शान्ति के लिए अधिकांश मनुष्य प्रभु की भक्ति वा पूजा करते हैं और शान्ति की याचना करते हैं । जब किसी की मृत्यु होती है तो भी **शान्ति प्रार्थना करते हैं और कहते हैं – हे प्रभु ! इस आत्मा को शान्ति देना ।**

प्रत्येक देश तथा भाषा में शान्ति सम्मेलन या धर्म सम्मेलन भी होते रहते हैं । अशान्ति के निवारण के लिए अनेक पुरुषार्थ हो रहे हैं । विद्वान, पंडित तथा नेता लम्बे लम्बे भाषण कर एक दो को अशान्ति के उत्तरदायी घोषित करते हैं । शान्ति स्थापना के लिए अनेक योजनायें भी बनाते हैं, फिर भी शान्ति मृगजल-समान

दूर ही दूर भासनामात्र रह गयी है अथवा कहें - ज्यों ज्यों दवा की, रोग बढ़ता ही गया ।

विज्ञान की शक्ति भी मानव की सुख-सुविधाओं एवं शान्तिसेवा में संलग्न है । परन्तु चलचित्र, दूरदर्शन आदि का मनोरंजन भी **मानव को स्थाई सुख वा शान्ति नहीं दे सकता । आज सभी महसूस करने लगे हैं कि विनाशी व्यक्ति व वस्तु से अल्पकाल की ही शान्ति मिल सकती है, सदाकाल की नहीं । साथ ही मानव तथा मानव प्रेरित कार्य मनुष्य को शान्ति नहीं दे सकते । क्योंकि जो स्वयं अशान्त है वह अन्य को शान्ति कैसे देगा ?**

हाँ, परमात्मा अविनाशी है और वही अविनाशी शान्ति के दाता हैं — इस बात को लगभग सभी मानते हैं । ऐसी मान्यता, गायन-पूजन भी आखिर क्यों है ? दुनिया यह नहीं जानती । जो जैसे कर्त्तव्य करता है, उसके आधार पर उसका गायन-पूजन चलता है । परमात्मा को सुख-दाता और शान्ति का सागर कहते हैं । तो जरूर उनका यह गायन और पूजन उनके ऐसे कर्त्तव्यों के आधार पर ही होगा । निश्चित रूप से परमात्मा से किसी काल में सभी को ऐसे अविनाशी सुख-शान्ति की अनुभूति हुई है ।

अब विचारणीय बात यह है कि परमात्मा ही सच्चे सुख और शान्ति के एकमात्र दाता कैसे हैं और यह अविनाशी सुख-शान्ति कब और कैसे प्राप्त होती है ?

संगमयुग और शान्ति के दाता परमात्मा शिव

परमात्मा को त्रिकालदर्शी, त्रिमूर्ति करन करावनहार कहते हैं। स्थापना, पालना और विनाश के कर्त्तव्य का भी निमित्त परमात्मा ही है। सृष्टिचक्र को नाटक भी कहते हैं। इस चक्र वा नाटक के आदि मध्य और अन्त की पुनारावृत्ति होती है। रात्रि के अन्त और दिन के प्रारम्भ की संगम वेला को प्रभात कहते हैं। ऐसे ही विश्वपरिवर्तन की वेला को विशेष युग अर्थात् संगम युग कहते हैं। धर्म ग्लानि के इसी समय में परमात्मा का दिव्य अवतरण प्रजापिता ब्रह्मा के तन में होता है। यही कारण है कि आत्मायें परमात्मा को, उसके अवतरण के समय को एवं उसके माध्यम को तथा उसके दिव्य कर्त्तव्यों को अज्ञानवश नहीं जानती हैं।

शान्ति की स्थापना कोई जादू या कल्पना नहीं है। करन करावनहार परमात्मा दुख और अशान्ति के मूल, विकारों को ज्ञान और योग की शक्ति से दूर करते हैं। सभी आत्माओं की विकारों रूपी मलीनता तथा **गरीबी से नर्क बनी हुई दुनिया, दैवी दुनिया अर्थात् स्वर्ग बन जाती है।**

परमात्मा रोग-शोक, विकारों के वशीभूत काँटों की तरह दुख देने वाली आत्माओं को फूल समान सुखदायी बना देते हैं। शरीर और मन के गन्दे वस्त्र को परमात्मा धोबी बनकर स्वच्छ बना देते हैं। आत्मा शुद्ध सोना, सतोप्रधान थी। विकारों की खाद से उसका जीवन श्रृंगार बिगड़ गया है, परमात्मा आकर पुनः दिव्यगुणों का श्रृंगार कराते हैं तथा गरीब से अमीर, रंक से राजा बना देते हैं। इन्द्रियों की गुलामी से मुक्त कर इन्द्रियजीत, मालिक बना देते हैं। रोग-शोक, अकाल-मृत्यु के पाश से निकाल जन्म-जन्मान्तर के लिए कॅचन काया, निरोगी काया सम्पन्न बना देते हैं।

यही संगमयुग की जादुई विशेषतायें हैं, जिन्हें पहचानना अत्यावश्यक है। इस युग की वास्तविक पहचान ही शान्ति की अनुभूति बन जाती है।

हॉ, पर इस सुख और शान्ति की अनुभूति करनेवाला कौन ? क्या यह अनुभव शरीर करता है या असके भीतर रही कोई और चीज है, जिसकी मॉग है — मुझे शान्ति चाहिए।

संगम युग और शान्ति के दाता परमात्मा शिव

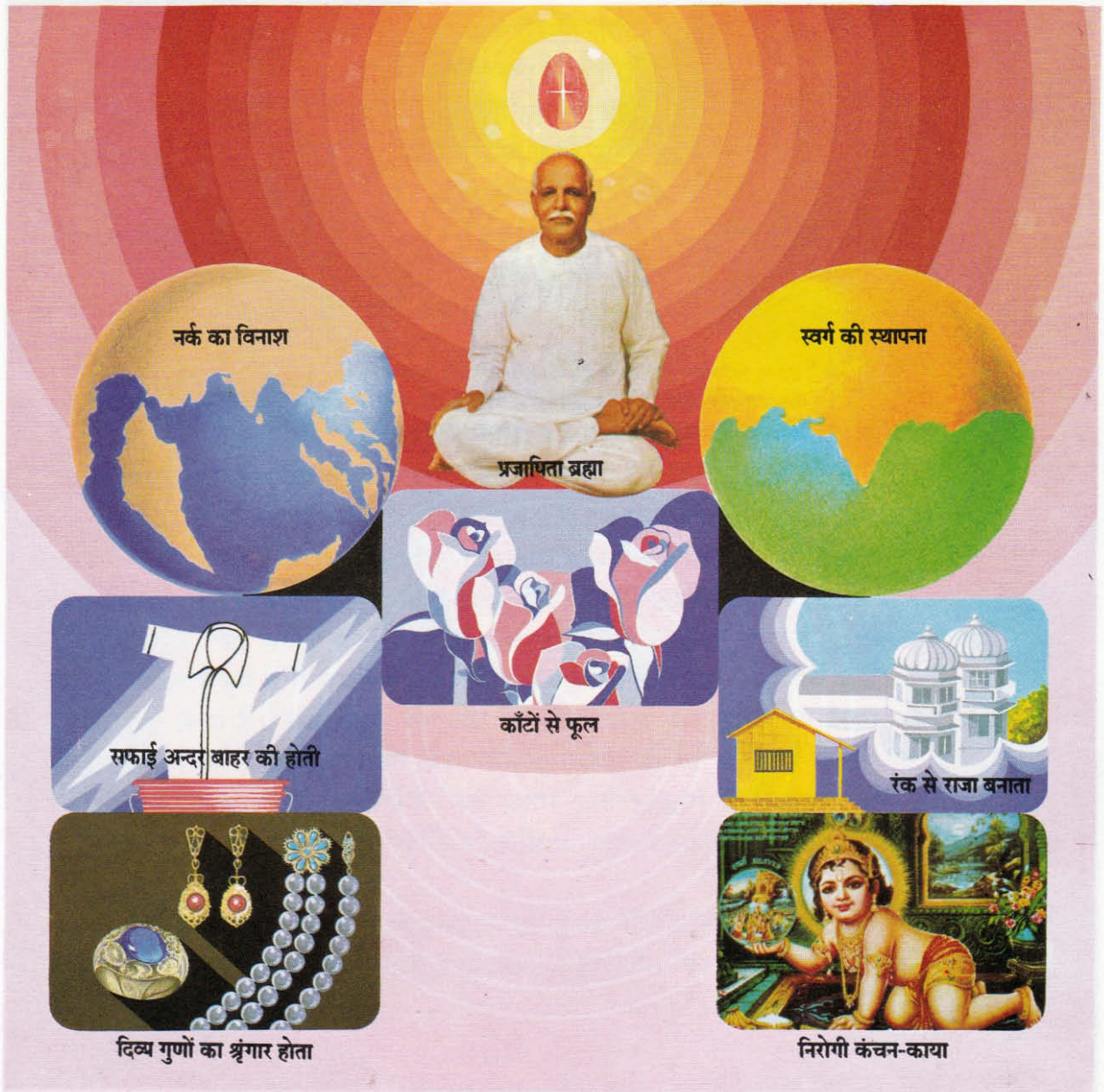

सृष्टि चक्र के अनुसार अभी ही सच्ची शान्ति की अनुभूति
करने का समय है ।

शान्तिधाम की निवासी शान्ति स्वरूप आत्मा

शान्तिधाम और शान्ति-सागर परमात्मा की दिव्य स्मृति से ही
अविनाशी शान्ति की अनुभूती होती है ।

शान्तिधाम की निवासी शान्त स्वरूप आत्मा

पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश इन पाँच तत्वों से सभी परिचित हैं, किन्तु **अखण्ड ज्योति महतत्व का बना शान्तिधाम, परमधाम अपने असली रूप में अपरिचित ही रहा है। यहाँ आत्मा अशरीरी, मुक्त अवस्था में रहती है इसलिए इसे मुक्तिधाम भी कहते हैं। इसी परमधाम से आत्मायें अपने अपने समय पर सृष्टि मंच पर अभिनय करने आती हैं। हम सब आत्मायें असल में इसी शान्तिधाम की मूल निवासी हैं-यह धारणारूप में जान लें तो एक बेहद की राष्ट्रभावना "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से एक नई मानवता का जन्म हो सकता है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय युद्धों को हम सदा के लिए विदाई दे सकते हैं और विश्व में शान्ति की पूर्ण स्थापना हो जायेगी।**

मैं आत्मा शान्तिधाम की निवासी हूं और शान्ति के सागर परमात्मा की अमर संतान हूं। परमात्मा की मैं आत्मा रचना हूं । अत: उनके गुण, स्वरूप तथा शक्ति का वरदान मुझे सहज ही विरासत (वर्से) के रूप में प्राप्त हो जाता है। जैसे बिजली एक शक्ति है और उसके प्रयोग से रोशनी, शक्ति आदि प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार शान्ति भी एक शक्ति है। शान्ति-सागर की स्मृति से शान्ति की गहरी अनुभूति की जा सकती है। यह दिव्य शान्ति की शक्ति हमारे अंग-अंग को शीतल बना देती है। यह शीतलता ही हमें सुख-शान्ति, आनन्द आदि का अनुभव कराती है, जिससे जीवन का सर्वांगीण विकास साधती हम आत्मायें सम्पूर्ण बन जाती हैं।

जैसे शरीर के विकास के लिए पोषक तत्वों की शक्ति की आवश्यकता रहती है वैसे ही **आत्मा के विकास के लिए शान्ति की शक्ति की जरूरत है। इसी शक्ति से सत्कर्म, पुण्यकर्म करने की सुसंस्कारमय वृत्ति बनती है। अशान्ति जन्य विस्मृति से हमारा असली धर्म-स्वरूप लुप्त प्राय: हो जाता है। उसी प्रकार जैसे शेर का बच्चा भेड़ों के साथ रहकर अपने को भेड़ ही समझने लगता है, परन्तु जब उसे अपने असली स्वरूप का पता चलता है तो वह एक सेकेण्ड में शेर की तरह चलने लग जाता है। उसी प्रकार "शान्ति-सागर की मैं अमर, शान्त संतान हूं" – इस बात की स्मृति आते ही शान्ति की शक्तियों का स्वरूप व स्थिति का सहज ही अनुभव होने लगता है।**

विश्व में शान्ति की स्थापना के लिए सरलतम तरीका यही है कि शान्ति के सागर परमात्मा को शान्तिधाम में बुद्धि-योग द्वारा याद करें – **इसी से शान्ति की पावन शक्ति का आविष्करण होगा।**

शान्ति-पथ की सात स्मृतियाँ

मैं पुरुष हूं। मैं धनवान, पढ़ा-लिखा,पद-प्रतिष्ठा वाला इन्सान हूं। मैं अमुख देश का रहनेवाला हूं, अमुख धर्म का हूं। इस प्रकार की विनाशी स्मृतियाँ सबको हैं, परन्तु हमको अपने अविनाशी **स्वरूप, स्वलक्ष, स्वदेश, स्वधर्म आदि का वास्तविक ज्ञान नहीं। इस अज्ञान और विस्मृति के कारण सभी आत्मायें दुखी और अशात बन गई हैं। स्वयं को एवं स्वयं के रचयिता परमात्मा को जानने से ही सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव होता है।**

हम सब शरीर नहीं, परन्तु ज्योतिर्बिन्दु आत्मा हैं। शरीर विनाशी है और यह बिन्दुरूप आत्मा अविनाशी है। हम सब इस सृष्टि के विभिन्न देशों के निवासी नहीं, किन्तु सूर्य-चॉद से भी उस पार अखण्ड ज्योति महतत्व से बने **शांन्तिधाम के निवासी हैं। देह के धर्म अनेक हैं, परन्तु आत्मा का स्वधर्म शान्ति है। लक्ष्य हमारा फरिश्ता बनने का है, जिससे सब रिश्ते समाप्त हो जाते हैं। विश्व कल्याण ही हमारा स्वकर्म है।**

संसार की अनेक प्रवृत्तियों में रहते भी प्रवृत्ति से न्यारा, प्यारा एवं **कमल फूल समान पवित्र रहना – यही हमारा स्वलक्षण है।**

शरीर में दो भृकुटी के मध्य में आत्मा रहती है। उस **भृकुटी के मध्य में स्थित आत्मा की स्मृति से वा आत्मा-भाव में जीने से सच्ची शान्ति की अनुभूति होती है।**

जो हम नहीं हैं, उसकी स्मृति से दुख मिलता है और असल में जो (आत्मा) हम हैं, उसकी स्मृति से सच्ची शान्ति मिलती है। इसके लिए शान्ति पथ की यात्रा के लिए इन सात मुख्य स्मृतियों को जानने एवं उनमें ही जीने से जीवन का दिव्य रूपान्तर हो जाता है। **लक्ष्य जैसा होगा वैसे लक्षण स्वतः आयेंगे ही और ऐसे लक्षणों की धारणा से शान्ति की मंजिल पर पहुंचना सहज हो जाता है।**

यह अनुभूति इतनी स्वभाविक होगी कि आप आश्चर्य में पड़ जायेंगे कि क्या सच्ची शान्ति की प्राप्ति और अनुभूति इतनी सहज है ? जन्म-जन्मान्तर के लिए जिसकी खोज की, क्या वह इतनी सरलता से मिल जायेगी ? जी हाँ, शान्ति की प्राप्ति अति सहज है, क्योंकि **शान्ति आपका अनादि अविनाशी खजाना है – आपके ही गले का हार है।**

शान्ति-पथ की सात स्मृतियाँ

हे, शान्ति-पथ के राही, इन सात स्मृतियों को सदा साथ रखने से आप सदैव अशान्ति के तूफानों से बचते हुए सम्पूर्ण बन जायेंगे ।

शान्ति – आत्म की सहज वृत्ति

शान्तिरूपी आभूषण से जीवन की हर प्रवृत्ति का श्रृंगार कीजिए।
शान्त रहिए, होश में रहिए।

शान्ति – आत्मा की सहज वृत्ति

लोग कहते हैं-मन चंचल है, मन बंदर समान इधर-उधर भागता है । मन को जीतना कठिन है, मन को मारना चाहिए । मन जीते जगतजीत बनेंगे । ऐसे मन को जीतने के लिए कुछ लोग अनेक प्रकार की हठ-योग प्रेरित साधना करते हैं, जिससे मन जड़ हो जाता है, उसकी संकल्प शक्ति समाप्त हो जाती है ।

अब शान्तिसागर पिता परमात्मा ने बताया कि **मन इस शरीर का अंग नहीं, किन्तु मन, बुद्धि, संस्कार युक्त आत्मा हैं। अतः मन अशान्त नहीं, किन्तु आत्मा अशान्त बनती है।**

पानी का सहज गुण गतिशील और समतल रहना है, सूर्य का स्वभाव प्रकाश देना है, गिरि कुन्जों का स्वभाव अडोलता और अचलता, चन्द्रमा का स्वाभाविक गुण शीतलता है, **उसी प्रकार मन की स्वभाविक वृत्ति है शान्ति। अतः शान्ति प्राप्ति के लिए मन को दबाने का पुरुषार्थ नहीं करना चाहिए। दमन से अशान्ति और बढ़ जाती है। मन की अपनी स्वाभाविक वृत्ति के अनुसार कर्म किये जायें तो प्रत्येक प्रवृत्ति निश्चित रूप से शान्ति-पूर्ण बन जायेगी। शान्ति तो आपके गले का हार है, इस उपहार को स्वीकार करो।**

मन को जीतने का प्रश्न नहीं, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहं आदि विकारों को जीतने से मन की स्वाभाविकता स्वतः प्रकट हो जाती है । मन रूपी स्वच्छ चन्द्रमा पर विकारों रूपी काली बदलियॉ छा जाती हैं, तो चन्द्रमा अल्पकाल के लिए छिप जाता है । विकारों की बदलियॉ हटते ही मन अपने स्वाभाविक गुण धर्म में आ जाता है । अब पुनः इस बात को स्वीकार कर जीवन-व्यवहार पवित्र बनाना है । **पवित्रता के कारण विकारों द्वारा उत्पन्न अल्पकाल की बेहोशी दूर हो जायेगी और फिर से शान्ति की स्वाभाविक वृत्ति द्वारा जीवन की हर प्रवृत्ति में नया श्रृंगार आ जायेगा।**

मन को मारो नहीं, परन्तु मन की स्वाभाविक वृत्ति को अपना कर सच्ची सर्वश्रेष्ठ शान्ति का अनुभव करो ।

मन को जड़ न बनाओ । उसके चेतन स्पंदित तारों को परमात्मा के साथ योग द्वारा जोड़कर इस अद्‌भुत शान्ति की शक्ति का अनुभव करो और जीवन को धन्य एवं सम्पन्न बनाओ ।

शान्ति – सर्वोच्च शक्ति

आधि, व्याधि और उपाधि से भरी इस सृष्टि में अनेक प्रकार की आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक शक्तियाँ हैं। इनमें **ज्ञान, गुण और शक्ति – इन तीन बातों का विशेष महत्व है। गुलाब के फूल का ज्ञान सबको है, उसकी सुगन्ध उसका गुण है और जब उसीका गुलकन्द बनता है तो उसकी शक्ति का रूपान्तर होता है। आज के मानव में ज्ञान बहुत है परन्तु गुण और शक्ति कम है। यही अशान्ति का कारण है।**

"सा विद्या या विमुक्तये" कहा अवश्य जाता है, पर मुक्ति और जीवनमुक्ति देने वाली शक्ति या विद्या का जन्म नहीं हुआ। विज्ञान की शक्ति भी इस दिशा में सफलता नहीं प्राप्त कर सकी। धन की शक्ति को सभी जानते हैं – **"सर्वे गुणा कांचनमाश्रयन्ते" फिर भी गुणों का गुनाकार नहीं हुआ। आज सृष्टि में धन बहुत है परन्तु सम्पत्ति कम है। राज्यसत्ता से सर्व प्रकार की शक्ति आ जायेगी, ऐसा मानकर लोगों ने राजसत्ता को सर्वोच्च शक्ति माना। परन्तु हम जानते हैं कि इसके लिए अशान्ति प्रेरित कितने युद्ध हुए हैं।**

इसी प्रकार धर्म की सत्ता का भी कम बोलबाला नहीं रहा, परन्तु **अंधश्रद्धा और रूढ़ियों के कारण धर्मसत्ता पंगु बन गई। धर्म से शान्ति आती है या शान्ति के समय धर्म-भाव बढ़ता है, यह एक सनातन प्रश्न है। इन सब शक्तियों का प्रादुर्भाव और विस्तार शान्ति में ही होता है। अशांति के समय में विद्यादान कैसे होगा? धन की चोरी के भय से सभी धनवान पीड़ित हैं।**

ज्योति अन्धकार को मिटाती है। धूपबत्ती स्वयं जलकर वायुमण्डल को सुगन्धित करती है। इसी प्रकार **शान्ति की शक्ति के प्रकंपन वायुमण्डल को शुद्ध करते हैं। साथ ही सभी भौतिक शक्तियों के नियन्त्रण की शक्ति, शान्ति की शक्ति द्वारा सहज ही प्राप्त होती है। शान्ति, शान्ति के सागर परमात्मा की शक्ति है, इसलिए सर्वोच्च शक्ति है।**

शान्ति-सागर पिता परमात्मा हमारा पिता है, तो उसकी सर्वोच्च शक्ति हमें विरासत (वर्से) के रूप में सहज ही प्राप्त हो जाती है। हॉ, इस प्रकार की प्राप्ति की कला आ जाये तो फिर अनेक प्रकार की प्राप्तियों से हमारी जीवन झोली छलकने लगे।

अब हम देखें कि कौनसी प्राप्तियाँ किसे और कैसे होती हैं?

शान्ति – सर्वोच्च शक्ति

शान्ति की शक्ति ही योग-शक्ति है, जिससे ज्ञान का प्रकाश विकीर्ण होता है । अगरबत्ति की सुवास और पावन तरंगों की भांति शान्ति की शक्ति के प्रकम्पनों से सर्व शक्तियाँ सतोप्रधान बन जाती हैं. जिससे विश्व का रूपांतर हो जाता है ।

पवित्रता ही शान्ति की जननी है

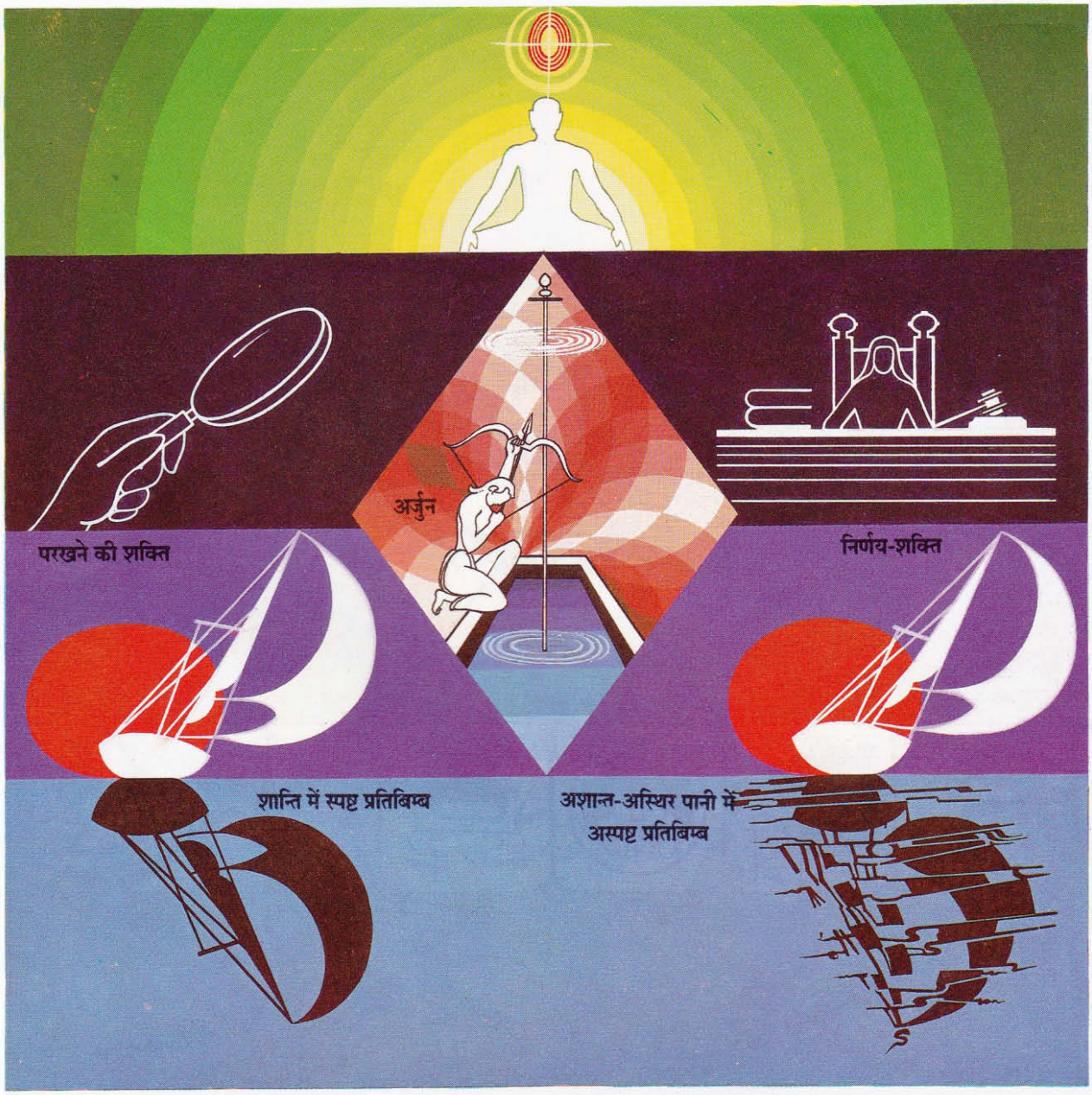

काम-क्रोधादि विकारों से मुक्त आत्मा ही पवित्र आत्मा इन्द्रियजीत मालिक आत्मा है ।
ऐसी पवित्र, स्वतंत्र आत्मा सफलतामूर्त है ।
पवित्र बनो, राजयोगी बनो ।

पवित्रता ही शान्ति की जननी है

अपवित्रता का मूल देहअभिमान है और देहअभिमान के कारण ही पाप कर्म होते हैं। दुख और अशान्ति के मूल कारण यह पाप कर्म हैं। अब विचारणीय बात यह है कि हम आत्मायें पापों से मुक्त पवित्र आत्मायें कैसे बनें ?

शान्त, निर्मल पानी में प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई पड़ता है और अशान्त अस्थिर और अशुद्ध पानी में प्रतिबिम्ब अस्पष्ट दिखाई देता है। **उसी प्रकार काम, क्रोधादि विकारों के वशीभूत अपवित्र आत्मा की विचारधारा भी दूषित और अस्पष्ट होती है। परिणाम स्वरूप एकाग्रता नहीं आती।**

सफलता प्राप्त करने के लिए एकाग्रता अनिवार्य है। अर्जुन ने एकाग्रता की शक्ति से मतस्यवेध किया। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए यथार्थ पुरुषार्थ एवं शान्त, पवित्र और एकाग्र मन की आवश्यकता है। पवित्र आत्मा में परखशक्ति सविशेष होती है। आज विश्व में माया के अनेक भ्रामक और आकर्षक रूप सर्वत्र व्याप्त हैं। अत: सत्य-असत्य, सार-असार, पाप-पुण्य, अच्छे-बुरे का निर्णय करना या परखना अति विकट कार्य हो जाता है। अपवित्र एवं अशान्त परिस्थिति में अनेक आत्मायें स्वस्थिति और स्वस्थता गँवा देती हैं। अत: परावलम्बी बन जाती हैं। पवित्र आत्मा अपने आदि शुद्ध और श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त होती है, अत: आत्मा अपनी इन्द्रियों की मालिक है। जहाँ गुलामी है वहाँ शान्ति नहीं। पवित्र आत्मा स्वतन्त्र है, शान्त है। अपवित्र, अशान्त मानव सच्चा निर्णय नहीं कर पाता। वह और ही अशान्ति का मायाजाल बढ़ाता रहता है। इसलिए मैं आत्मा, पवित्र आत्मा हूं, पवित्रता के सागर परमात्मा की पवित्र सन्तान हूं - ऐसे पवित्र-श्रेष्ठ संकल्पों में रमण करने से अशान्त और अपवित्र वायुमण्डल समाप्त हो जाता है। ऐसी एकाग्र और शान्त चित्तता में निर्णय शक्ति खिल उठती है।

पवित्रता एक प्रकाशमणि है, जिसकी ज्योति से भ्रष्टाचार जनित अन्धकार दूर हो जाता है। आज विश्व को ऐसे रूहानी पवित्रता के प्रकाश की आवश्यकता है, जिससे विश्व को वास्तविक नेतृत्व मिले, सच्चा मार्गदर्शन मिले। आज के नेता भी पवित्रता की शक्ति को जानकर मानवमात्र की रूहानी तन्दुरुस्ती के क्षेत्र में उसका आयोजन करें तो आज के व्यापक भ्रष्टाचार को आसानी से समाप्त किया जा सकता है। भ्रष्टाचार को दूर करने से कर्म-कुशलता आयेगी और एक नये शान्त, स्वस्थ मानव-समाज का निर्माण होगा।

शान्ति द्वारा कर्म कुशलता की कला

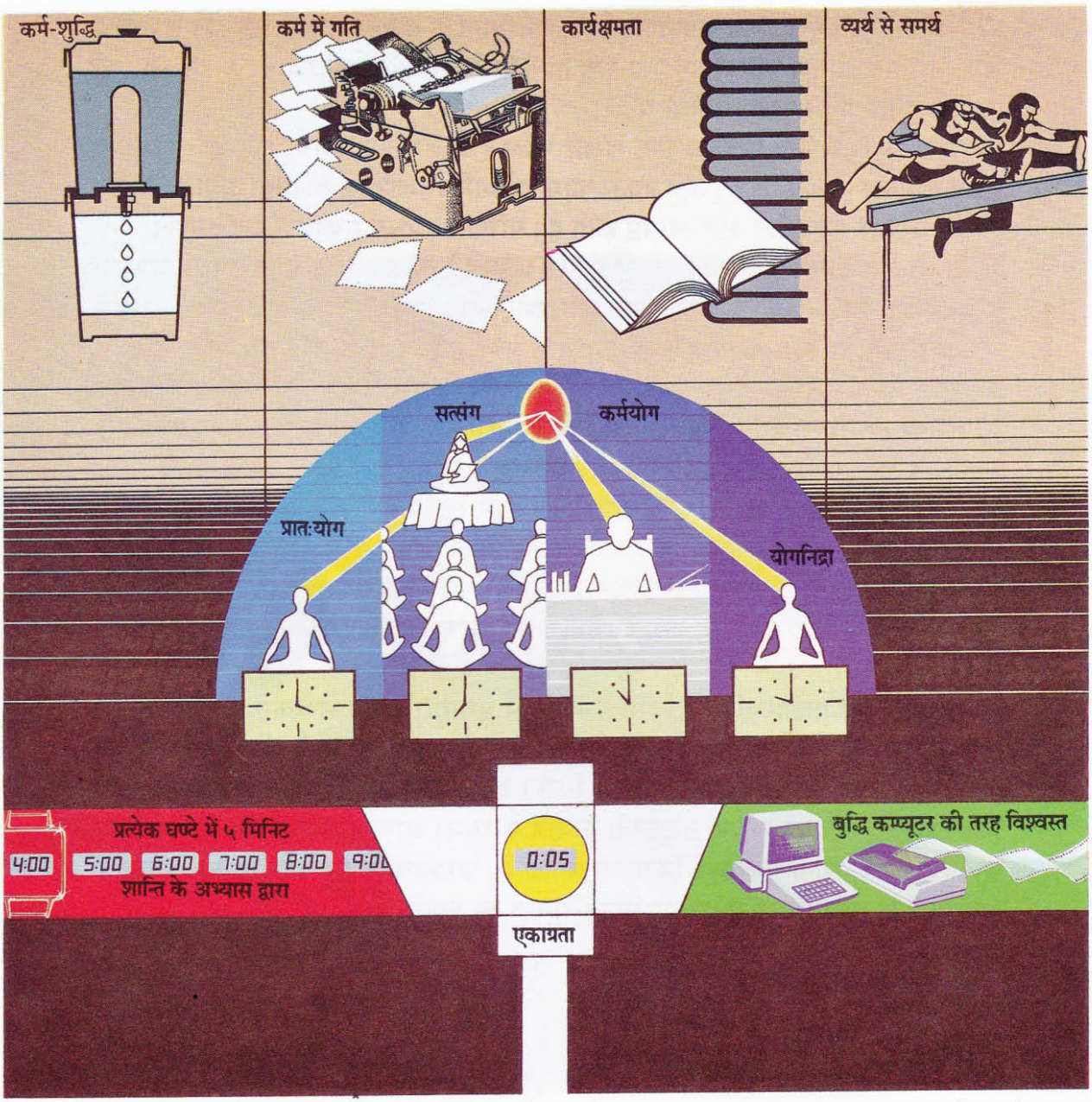

जीवन का प्रत्येक कर्म शुद्ध, गतिमय, विकसित और समर्थ बने तथा मनुष्य सफलता को प्राप्त करे इसके लिए हर कर्म करते मन-बुद्धि को परमात्मा से जोड़ना ही शान्ति की शक्ति भरना है ।

शान्ति द्वारा कर्म कुशलता की कला

जीवन एक यात्रा है — जन्म से मृत्यु तक की, और बीच में है कर्मों का व्यापार। जीवन जीना भी एक कला है। इस कला को न जानने के कारण लोग अनेक बातों से स्वयं को दुखी और अशान्त करते तथा अन्यों को भी करते हैं। कर्म, अकर्म तथा विकर्म का ज्ञान अब परमात्मा ने हम आत्माओं को दिया है। **श्रेष्ठ कर्म द्वारा सदाकाल के लिए सुख शान्ति की प्राप्ति हो सकती है तथा अन्त में धर्मराज की सजाओं से हम बच सकते हैं।**

आज क्रोध के वशीभूत होकर या लोभवश कार्य करना सबको आता है, विकारवश कार्य सहज बन गये हैं, परन्तु शान्ति, प्रेम से परिपूर्ण निस्वार्थ एवं सहनशील होकर भी कार्य हो सकते हैं, जिनके परिणाम का आस्वाद और ही है। यह सत्य है कि अशान्ति प्रेरित सभी कर्म आदि, मध्य और अन्त दुख ही देंगे। **"जैसा बीज वैसा फल" के अनुसार सभी शान्ति और स्नेह से कार्य करें तो जरूर उसका परिणाम सुख-शान्ति सम्पन्न ही होगा।**

उसी प्रकार व्यर्थ चिन्तन अशान्ति बढ़ाता है। बीती बातों का चिन्तन चिन्ता, शोक, दुख आदि की वृद्धि करता है। बदला लेने की भावना के बदले स्वयं को बदलकर दिखाने की शुभ भावना और पुरुषार्थ से जीवन में आमूल परिवर्तन आ जाता है। भोगी जीवन का अन्त दुखद है और योगी जीवन सुखद है। **इसलिए भोगी जीवन को योगी जीवन में बदलना अत्यावश्यक है।**

नींद और भोग जितना बढ़ायेंगे उतना बढ़ जायेगा और जितना कम करना चाहें कर सकते हैं। यदि प्रातः जल्दी उठकर परमात्मा को याद कर कर्म व्यवहार करेंगे तो समय की कमी के कारण जो मानसिक तनाव होता है, वह कम हो जायेगा, क्योंकि योगी के लिए २७ घण्टों का दिन होता है। इसलिए **कर्म व्यवहार में समय प्रति समय परमात्मा की याद से विचार-यात्रा का नियमन किया जाये तो तनाव दूर हो जाता है और कर्म कुशलता बढ़ जाती है। उसी प्रकार रात को सोते समय भी परमात्मा की याद में अपने को शुद्ध आत्मा समझ नींद करेंगे तो अशुद्ध स्वप्नों रहित नींद भी योग निद्रा बन जायेगी। तन-मन की थकान थोड़ी नींद से ही समाप्त हो जाती है और परिणामस्वरूप प्रत्येक कर्म शुद्ध, गतिमय, विकसित, समर्थ और सफल बन जाता है।**

परिवर्तन शक्ति से शान्ति की प्राप्ति

शुद्ध सोने को जैसा चाहें वैसा मोड़ सकते हैं। कहते हैं झुकने वाला तो प्रभु का भी प्यारा है। इस मोड़ने की शक्ति से ही जीवन में सुख-शान्ति आ सकती है। जब तक जीवन में अशुद्धि होगी तब तक यह परिवर्तन करने की शक्ति नहीं होगी। इसके लिए सर्वोत्तम साधन है योग। योग की पावन अग्नि में अपने पुराने संस्कार, स्वभाव, सम्बन्ध आदि सबमें परिवर्तन सहज ही हो जाता है। जिन पुराने संस्कार, स्वभाव तथा सम्बन्धों ने दुख दिया है, **उनका परिवर्तन कर उन्हें सतोप्रधान बनाने से ही सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव होगा। अविनाशी सुख-शान्ति के लिए दूसरों के पूर्ण परिवर्तन की प्रतीक्षा न कर स्वयं में परिवर्तन लाना है। क्योंकि जो करेगा सो पायेगा। इसलिए राजयोग की शक्ति को पहचानों और धारणा में अपनाओ। क्योंकि राजयोग से आप शान्ति के सागर शिव परमात्मा से सुख-शान्ति-प्रेम-आनन्द आदि की शक्ति को जान सकते हो तथा प्राप्त कर सकते हो।**

माला की ताकत उसके कमजोर दानों के बराबर होती है। **मुझे विजयमाला का दाना बनना है, यह शुभ भावना सदा स्मृति में रहनी चाहिए।**

साहब बनना आसान है, परन्तु **सहयोगी बनना कठिन है। अतः प्रत्येक का सहयोगी बन स्नेह संपादन कर सकते हैं।**

जीवन में दो बातें हैं — या तो हम कैंची बनकर काटने-तोड़ने का कार्य करें या सुई बन कर जोड़ने का कार्य करें। **तोड़ना आसान है, परन्तु जोड़ना कठिन है। छोटी-सी सुई से यह सीख लें तो संसार में सर्वत्र शान्ति हो जाये।**

प्रभु से हम कहते हैं — हे प्रभु, मेरे अवगुण चित्त न धरो। तो हम क्यों औरों के अवगुण अपने चित्त पर लेते हैं? **हमें फूल की सुगन्ध जीवन में धारण करनी है, काँटों की दुःखदायी वृत्ति नहीं।**

बच्चों का एक खेल है — साँप और सीढ़ी का। यह खेल कदम-कदम पर सबके जीवन में आता है। उन्नति की सीढ़ी के सोपान सबके सामने आते हैं, परन्तु कई सीढ़ी रूपी परिवर्तन की चुनौती को स्वीकार नहीं करते। हमें जीवन में **आने वाले ऐसे परिवर्तन के मौकों को चूकना नहीं चाहिए।**

कहते सभी हैं कि **अपकारी पर भी उपकार करना चाहिए, पर इस चुनौती को स्वीकार कर धारण कितने करते हैं? तो हमें शान्ति से सदा यह सोचना है – मुझे अपने में परिवर्तन करना है। विश्व परिवर्तन मेरे परिवर्तन से होगा।**

परिवर्तन शक्ति से शान्ति की प्राप्ति

अन्य आत्माओं के परिवर्तन का इन्तजार न कर अपने संस्कारों के परिवर्तन का इन्तजाम करो ।
विश्व परिवर्तन की नींव स्वयं बनो । बनो महान्, करो कल्याण ।

राजयोग से शान्ति की क्रान्ति

धर्म, राष्ट्र, कौम आदि भेदों को मिटाने के लिए हम सब एक पिता परमात्मा की सन्तान हैं, एक दैवी परिवार के सदस्य हैं, हम सबका स्वधर्म शान्ति है — इस प्रकार की शुभभावना से ही सच्ची शान्ति का अवतरण होगा।

राजयोग से शान्ति की क्रान्ति

इस सृष्टि पर अनेक प्रकार की क्रान्तियों की अनुभूति हमने की है । सब क्रान्तियों का लक्ष्य रहा है — समाज में सुख-शान्ति बढ़ाना । इन सब क्रान्तियों द्वारा इन्द्रिय सुख-सुविधायें तो बढ़ी हैं, परन्तु **आन्तरिक सुख अर्थात् अतीन्द्रिय सुख और शान्ति का बढ़ावा नहीं हुआ। तो अब एक ऐसी क्रान्ति की आवश्यकता है, जिससे हम सब आत्माओं की जन्म-जन्मान्तर की आश पूर्ण हो जाये ।**

राजयोग की विधि अति सहज है । इस विधि से हम अपने आपको शरीर नहीं परन्तु आत्मा समझ एक परम पिता परमात्मा की सन्तान समझ आपस के व्यवहार एवं प्रवृत्ति करनी है । **उससे आपस में भाई-भाई की दृष्टि तथा एक दैवी परिवार की भावना बढ़ती है। इस विशेष दृष्टि-बिन्दु से पारस्परिक मतभेद, झगड़े, वैर-विरोध आदि सभी समाप्त हो जाते हैं । राजयोग द्वारा यह सामाजिक क्रान्ति वर्तमान में घटित हो रही है । इस क्रान्ति से अनेकता का अन्त और एकता का नवनिर्माण होगा ।**

आज विश्व में अनेक धर्म हैं । आत्मा भिन्न-भिन्न जन्मों में भिन्न-भिन्न नाम रूप धारण करती है । जिस धर्म को मानने वाले परिवार में वह जन्म लेती है, उसी के आधार पर हम सब उसे उस धर्म विशेष की या देश की मानते हैं । देह के अनेक धर्म हैं और देश हैं । अनेक धर्म होते हुए भी गुण और शक्तियों के बारे में सबकी मान्यता समान है । सत्य, प्रेम, आनन्द आदि गुणों के बारे में सब धर्मों या देशों की मान्यता एक समान है । **शान्ति सबके गले का हार है । शान्ति हमारा स्वधर्म है । हमारा घर भी शान्तिधाम है, जिस एकमात्र घर से हम सब आत्मायें इस सृष्टि रंगमंच पर विविध नाम-रूप धारण कर अभिनय करने के लिए आये हैं ।**

आज धन-सम्पत्ति की व्यवस्था किस प्रकार हो — इस बात में मत मतान्तर हैं । उसके आधार पर पूंजीवाद, समाजवाद तथा साम्यवाद आदि की रचना हुई है । कुटुम्ब, कीर्ति, शरीर, शिक्षा आदि अनेक प्रकार की सम्पत्ति मानी गई है । उसकी मालिकी, विभाजन, संवर्धन आदि के बारे में इन सब वादों में कोई भी विवाद नहीं । **सतयुगी दैवी सृष्टि का दैवीवाद भी एक समाज रचना है, जिसमें सभी प्रकार की सम्पत्तियों के संवर्धन, उपार्जन आदि के बारे में सतोप्रधान सुचारु समाज व्यवस्था है ।**

इस प्रकार राजयोग द्वारा शान्ति की क्रान्ति हो रही है, उसमें भाई-भाई की दृष्टि और दैवी परिवार की भावना से धर्मभेद, भाषा, देश, वर्ग, विद्या, रंग आदि के सभी भेदों का अन्त हो जाता है । अत: इस सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक क्रान्ति को समझना आवश्यक है ।

शान्ति और नारी-शक्ति

घर में चीजें सभी अपनी जगह पर होती हैं परन्तु अंधेरे में दिखाई नहीं पड़ती, परन्तु रोशनी में अपने आप स्पष्ट हो जाती हैं। **उसी प्रकार ज्ञान की विस्मृति के अंधकार में जो आत्मिक गुण और शक्तियॉ छिपी हैं, वे ज्ञान की रोशनी में ही प्राप्त हो सकती हैं।**

अ वश आत्मा अशान्त, दुखी और कर्मेन्द्रियों के अधीन हो चुकी है। चरित्र भ्रष्ट, धर्म और कर्म भ्रष्ट होकर भ ती है। शान्ति आत्मा का धर्म है।

शान्त आत्मा कर्मेन्द्रियों की मालिक बन स्वच्छता, श्रेष्ठता और सम्पूर्ण चारित्रय को धारण करती है। **शान्ति दिव्य गुणों की जननी है। शान्ति आत्मा का श्रेष्ठ श्रृंगार है। शान्ति ही सतयुगी नई सृष्टि की नींव है।**

काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार आदि दुश्मनों से जीत पाने के लिए ज्ञान गदा है। ज्ञानमय मधुर वाणी शंख ध्वनि है। स्वचिन्तन तथा सृष्टिचक्र का चिन्तन और परमात्मा के गुण तथा कर्त्तव्य की स्मृति स्वदर्शन चक्र है। कमल पुष्प पवित्र और श्रेष्ठ जीवन का प्रतीक है। इन शस्त्रों से हमें विकारों के भूतों को भगाना है और शान्ति-सुख तथा स्नेहमयी दैवी दुनिया का निर्माण करना है।

ज्ञान की देवी श्री सरस्वती, शक्ति की देवी श्री अम्बा या श्री दुर्गा तथा समृद्धि की देवी श्री लक्ष्मी - तीनों नारी शक्ति के प्रतीक हैं। अत: नारी शक्ति को जागृत होना है। ये तीनों देवियॉ बहनों और माताओं का आह्वान करती हैं कि आपका ही यह सम्पूर्ण स्वरूप है। परमपिता शिव परमात्मा से मन-बुद्धि जोड़कर आत्मा में शक्ति भर विश्व की आत्माओं के दुख-दर्द हरो। विश्व का कल्याण,सतयुगी सृष्टि का निर्माण और उद्घाटन नारी शक्ति द्वारा ही होता है। अत: बहनों, माताओ उठो ! आपको ही जगत की आत्माओं के दुख-दर्दो को मिटाना है। ज्ञानमयी सरस्वती समान बनकर परमात्मा का संदेश सभी को देना है। शक्ति स्वरूपा श्री दुर्गा बन आत्माओं को विकारों से मुक्त करना है तथा श्री लक्ष्मी समान सम्पूर्ण स्वरूप अर्थात् दैवी गुणयुक्त बनना है। इसी संकल्प को लेकर नई दुनिया की स्थापना के कार्य में लग जाओ। दुखी आत्माओं की पुकार आपको सुनाई नहीं देती है ? **हे, नारी शक्ति उठो, जागो और परमात्मा के विश्व कल्याण के कर्त्तव्य में लग जाओ।**

नारी शक्ति ही विश्व में शान्ति की क्रान्ति लायेगी। विश्व के कोने कोने में परमात्मा का संदेश फैलायेगी। इसीलिए नारी को जननी,माता श्री लक्ष्मी और श्री अम्बा-दुर्गा स्वरूप कहा जाता है।

शान्ति और नारी-शक्ति

सुख, शान्ति, विद्या तथा चरित्र सम्पन्न सृष्टि का निर्माण अब नारी-शक्ति द्वारा हो रहा है ।
आज का समय ऐसी गायन-पूजन योग्य देवियों समान नारियों का आह्वाहन कर रहा है ।

शान्ति-दान सर्वश्रेष्ठ दान

धन दान से अल्पकाल की प्राप्ति होती है। शान्ति दान से अविनाशी अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है। बाकी सब दान हैं, शान्ति वरदान है।

शान्ति-दान सर्वश्रेष्ठ दान

दान की महिमा अपरम्पार है । दान द्वारा गरीब और अमीर के बीच की भेद रेखा कुछ अंशों में कम होती है तथा मदद करने, सहयोगी बनने से भ्रातृत्वभाव पैदा होता है । कुछ ऐसे कमजोर, अशक्त मानव भी हैं, जिन्हें समय पर मदद मिल जाये तो उनको जीवनदान मिल जाता है । धनदान, विद्यादान, श्रमदान आदि अनेक प्रकार के दानों के पीछे जो भाव हैं, उसमें भिन्नता है । जैसे किसी में कीर्ति का भाव, तो किसी में आत्मतृप्ति का भाव है । कई प्रकार के दानों का प्रभाव, परिणाम और प्राप्ति अल्पकाल की होती है । भूखे को अन्न देने से उसकी अल्पकाल के लिए तृप्ति होगी । वस्त्रदान भी अल्पकाल का ही है । पुन: अन्न, वस्त्र की मॉग बनी ही रहती है । अत: स्थाई, चिरंतन प्राप्ति हो जाये, उसके लिए किस प्रकार का दान किया जाये ? स्मृति में रहे –

धन पुस्तक खरीद सकता है, दिमाग नहीं ।

धन अन्न खरीद सकता है, पाचन-शक्ति नहीं । धन बिस्तर खरीद सकता है, नींद नहीं ।

धन मकान खरीद सकता है, घर नहीं । धन दवाई खरीद सकता है, स्वास्थ्य नहीं ।

इस प्रकार धन दान की मर्यादा अपनी है । आज की दुनिया में कई ऐसे हैं, जिनके पास धन-वैभव, शरीर-वैभव आदि हैं, फिरभी दुखी अशान्त हैं । **इस विनाशी धन से उन्हें सच्ची शान्ति नहीं मिलती । सभी शाश्वत, अविनाशी सुख-शान्ति की प्राप्ति की पुकार मचा रहे हैं । ऐसी पुकार सुनकर उनके प्रति उपकार की भावना से कौन सा दान दिया जाये ?**

इस समय सभी आत्माओं का बुद्धियोग विनाशी चीजों के साथ है, अत: इनसे शान्ति भी विनाशी ही मिलती है । **अविनाशी परमपिता परमात्मा के साथ बुद्धियोग जोड़ने से प्राप्ति भी अविनाशी होती है । परमात्मा की याद से ही हम सब आत्माओं को अतीन्द्रिय सुख-शान्ति की अनुभूति होगी । दुख-रोग-शोक आदि के कारण आत्माओं द्वारा किये गये पाप कर्म भी हैं, जिनसे छुटकारा दिलाने की शक्ति अन्य किसी दान में नहीं । एकमात्र राजयोग में ही विकर्म विनाश कराकर विकर्मों की सजा से छुटकारा दिलाने की शक्ति है ।**

इस प्रकार परमात्मा के साथ बुद्धियोग जुटाकर **सबको अतीन्द्रिय सुख-शान्ति का अविनाशी अनुभव कराना ही सर्वश्रेष्ठ दान है । जैसे शान्ति की अनुभूति अपनी है, ऐसे शान्ति की भाषा भी अपनी है । शान्ति की भाषा जानने का अभ्यास करने से ही सच्ची शान्ति का अनुभव कर सकेंगे । इस शान्ति की भाषा का सम्प्रेषण ही सर्वश्रेष्ठ विद्यादान है ।**

मौन की भाषा और शक्ति

आज की सृष्टि अनेक प्रकार की आवाजों से आक्रान्त है । मनुष्य की वाणी क्रोध-अहंकार आदि विकारों के वश होकर अशान्ति फैलाने वाली हो गई है । व्यर्थ बोलने से या सोचने से आदमी थक जाता है तथा शक्ति का व्यय भी होता है । सम्बन्ध भी बिगड़ सकता है । कम बोलने से शक्ति का संचय होता है, विचार शक्ति या मनन चिन्तन शक्ति का विकास होता है, एकाग्रता में वृद्धि होती है । जैसे सूरज की किरणें बहिर्गोल कॉच में एकत्रित होकर कागज के टुकड़े को जलाने में समर्थ रहती हैं, वैसे मन के संकल्प, शक्ति में परिवर्तन होकर विजय को प्राप्त कराते हैं ।

मौन के कारण विवेक पैदा होता है । वाणी मधुर बनती है । वाणी का प्रभाव लक्ष्य प्राप्ति कराता है । मीठी भाषा से उत्तम सेवा होती है । कटु वचन से दुख पैदा होता है । **सत्य भी मधुरता और नम्रता से बोलना चाहिए । कटु वचन काँटों की तरह चुभते हैं । कार्य सिद्ध होते नहीं, और ही असफलता को प्राप्त कराते हैं । स्नेहयुक्त मधुर वाणी अन्य के जीवन में आनन्द और उत्साह के दीपक जलाती है । कटु वाणी नाहक दुश्मनी पैदा कराती है । महात्मा गाँधी जी की वाणी में मौन की शक्ति, मधुरता और सच्चाई होने से प्रभाव पैदा करती थी । गाँधारी ने नयनों के मौन की शक्ति एक बार पट्टी खोलकर दुर्योधन को दान की थी । इन्द्रियों का मौन वरदानी बना सकता है । हर कार्य में सामर्थ्य प्रदान कर विजयी बनाता है । हर कार्य में अगर हमारा मन, ईश्वर में एकाग्र रहे तो कार्य में कुशलता प्राप्त हो जाती है । जीवन आनन्दमय बन जाता है । हफ्ते में एक दिन या हर रोज तीन-चार घण्टों का मौन आत्मिक शक्ति प्रदान कराता है ।**

व्यर्थ संकल्पों से मन की ताकत कम हो जाती है । थोड़े परन्तु श्रेष्ठ विचारों से मन उत्साह और प्रसन्नता में रहता है । वैसे ही मुख, कर्ण और दृष्टि का मौन आत्मा की ताकत में वृद्धि प्राप्त कराता है । जीवन हल्का, सरल और कलामय बन जाता है । मुख द्वारा व्यर्थ बकवास, आंखों का भटकना और निन्दा आदि व्यर्थ बातों में इन्द्रियों को बहाने से मनुष्य अशान्ति, दुख और क्लेश का ही अनुभव करता है । मानसिक तनाव, अनिद्रा आदि रोगों से ग्रस्त हो जाता है । जीवन के हर कार्यों में आत्मविश्वास खो देता है ।

इसलिए अगर हमें जीवन में खुशी, उत्साह, उमंग चाहिए, मानसिक सन्तुलन चाहिए, विवेक और सजगता चाहिए तो हमें शान्त स्वरूप में रहकर परमपिता परमात्मा से जो शान्ति के सागर हैं, मन-बुद्धि जोड़ना है । यही राजयोग है । इससे आत्मिक शक्ति बढ़ती है । डॉक्टर्स भी अगर दवाई (इलाज) के साथ दुआओं का उपयोग करें तो रोग-शोकग्रस्त मानवों की महान सेवा हो सकती है । हर मानव-मन शान्ति से भरपूर हो, हर घर, हर कोना शान्ति का कुण्ड बनें तो सृष्टि जल्दी शान्ति से परिपूर्ण बन जायेगी ।

मौन की भाषा और शक्ति

मन के मौन द्वारा केन्द्रित हुई स्नेहमयी पवित्र वाणी शान्ति एवं निर्माण कार्य के लिए वरदानी बन जाती है। मौन की शक्ति को जानो और अपनाओ।

देश-विदेश में शान्ति-कुण्ड

हर स्थान का अपना विशेष वायुमण्डल होता है, अत: आज हर धर्म, देश, वर्ग और विचार-व्यवहार वाले मनुष्यों के लिए स्थान-स्थान पर शान्ति-अनुभूति केन्द्रों की आवश्यकता है ।

शान्ति कुण्ड की स्थापना

शान्ति प्राप्त करने के लिए लोग खेलकुद, बाग-बगीचे, पिकनिक, क्लब, एकान्त, मन्दिर-तीर्थ आदि साधनों का सहारा लेते हैं। इनसे सदाकाल की शान्ति नहीं मिलती। ये साधन सिर्फ अल्पकाल के लिए ही शान्ति-सुख दे सकते हैं। अत: हमें शान्ति की खोज बाहर नहीं, अन्दर करनी है।

हमें विचारों में, वाणी में और हर कर्म में शान्ति की आराधना करनी है। हमारा मन शान्ति से भरा हुआ शीतल हो। **उठते, बैठते, सोते समय हमें आश्रम की तरह रहकर शान्ति के साथ ही रहना है। हमारा घर शान्ति से परिपूर्ण लगे – इसलिए हमें शान्ति को ध्येय बनाना है। हमारे संकल्प बोल और हर कर्म से चारो ओर शान्ति के वायब्रेशन (प्रकम्पन) फैलें – इसी शुभ भावना से हमें शान्ति का स्वराज्य फैलाना है। हमारा घर, घर का कोना-कोना हर आगन्तुक को शान्ति की अनुभूति करानेवाला हो। यह कैसे संम्भव होगा? जब "हमारा स्वधर्म शान्ति है", ऐसा हम निश्चय करेंगे और अपने मन-बुद्धि को सदा शान्ति के सागर से जोड़ने का पुरुषार्थ करते रहेंगे, तभी लोगों को हम शान्ति की अनुभूति करा सकेंगे।**

क्लब या बगीचे बनाने का हेतु है-लोगों के मन को प्रसन्नता मिले। उसी प्रकार शान्ति के स्थान भी बनें, शान्ति के उद्यान बनें, **जैसे मनुष्य के शीतल मन से प्रदीप्त मधुर व्यवहार हताश मनुष्य को उत्साह दिलाता है, नई उमंग प्रदान करता है-वैसे घर-बाग-बगीचे में शान्ति के प्रकम्पन के स्थान भग्नाश हृदयों को रोशनी से भर देंगे।**

कण्व ऋषि के आश्रम के चारों ओर फैली हुई शान्ति की लहरें राजा दुष्यन्त के मन की हिंसा वृत्ति को शीतल बना देती है और वह हिरनों को मारने की क्रूरवृत्ति से मुक्ति को पाता है। यह परिवर्तन ऋषि के आश्रम का वायुमण्डल पैदा कर सकता है, तो मनुष्य के मन की सूक्ष्म शक्तियॉं कितना प्रभाव और परिवर्तन पैदा कर सकती हैं - यह सोचो। इसलिए बगीचे आदि स्थानों में ऐसे कमरे या स्थान बनाये जायें, जहॉं का वायुमण्डल आने वालों को शीतलता का अनुभव करा सके। ऐसे स्थान योगाभ्यास से ही बन सकते हैं। **मन-बुद्धि का तार आत्मिक स्थिति में एकाग्र रहकर, शान्ति के सागर परमपिता परमात्मा से जोड़ने से शान्ति की लहरें वायुमण्डल में फैलेंगी।**

जैसे रोगी की बामारियों के इलाज के लिए अस्पतालें बनी हैं, वैसे मन की अशान्ति और तनाव दूर करने के लिए शान्ति के कुण्डों का आयोजन जरूरी है। ऐसे शान्ति कुण्ड विश्व में जगह जगह फैले हुए इस संस्था के सेवाकेन्द्र हैं, जहॉं लाखों की संख्या में भाई बहन आकर शान्ति के सागर से योग लगाकर शान्ति का अनुभव करते हैं।

स्वयं परमपिता परमात्मा ने आकर विभिन्न धर्म, देश, वर्ग, विचार, व्यवहार वालों के लिए ही ऐसे शान्ति कुण्डों की रचना की है। आइये आप अवश्य अपना कल्याण करें।

अब घर जाना है

कहते हैं यह सृष्टि एक रंगमंच है । हमारा घर तो नहीं है, अत: सभी कलाकारों को वापस घर जाने की स्मृति बराबर रहती है । सृष्टि एक मुसाफिरखाना है, तो मुसाफिर वापस घर लौटने की तैयारी अवश्य करेगा । संध्या समय घर वापस जाने की सहजवृत्ति सभी प्राणियों में सहज-रूप से देखी जा सकती है ।

रात के बाद दिन और दिन के बाद रात - इस परिवर्तन की प्रक्रिया का पुनरावर्तन सृष्टि का स्वाभाविक क्रम है, उसी प्रकार ब्रह्मा की रात्रि और ब्रह्मा का दिन - यह बेहद का सृष्टिचक्र है । संसार शब्द का अर्थ ही है - बहता, बदलता, घूमता रहना । काल-चक्र भी निरन्तर फिरता रहता है । स्वास्तिक चक्र इसी काल चक्र का प्रतीक है ।

इस काल चक्र से बाहर जो जन्म-मरण से रहित हैं तथा सृष्टि के विधायक, नियामक एवं परिवर्तक हैं - वही पिता परमात्मा अब कह रहे हैं - मीठे बच्चे आप सबकी जन्म जन्मान्तर की आश है कि हमें शान्ति मिले । क्योंकि आखिर आप मेरे धाम- उस शान्ति धाम के ही निवासी हो । वहीं से अभिनय करने सृष्टिमंच पर आये हो । अब आप थक गये हो, यह नाटक अब समाप्त होने ही वाला है । आपका वह आदि-अनादि घर खाली हो गया है और कालचक्र के अनुसार अब वापस घर जाने का समय हो गया है । यह निमाशाम की बेला, अपने घर लौटने की वेला है । आपका मीठा घर तथा मीठा बाप आपका इन्तजार कर रहा है । आप सबकी थकान दूर करने, वापस घर ले जाने मैं आया हूँ ।

जैसे ही आप घर वापस पहुंचेंगे, इस सृष्टि पर सफाई प्रारम्भ होगी, सृष्टि सतोप्रधान बन जायेगी । फिर से ब्रह्मा का दिन, नई स्वर्गीय, शान्ति-सुख सम्पन्न सृष्टि की रचना आपके लिए होगी । नये कल्प का नया नाटक प्रारम्भ होगा । इसलिए मीठे बच्चे समय को पहचानों । आप अपने देह, देह के सम्बन्धों को भूलो और देखो विश्व-घड़ी में कितने बजे हैं । आने वाले कल और कल के विश्व को याद करो, मुझ परमात्मा को याद करो । अब बस एक ही महामन्त्र स्मृति में रखो कि मुझे शान्तिदूत-फरिश्ता, निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बन अपने मीठे प्यारे घर-स्वदेश-शान्तिधाम जाना है ।

अब घर जाना है

शिव भगवानुवाच : मीठे बच्चे देह और देह के सभी सम्बन्धों को भूलकर मुझे याद करो, अब घर (परमधाम) जाना है, आपका मीठा घर आपको बुला रहा है, आपका मीठा बाप आपका इन्तजार कर रहा है ।